Notes

Date 8.5.20

DII (HONS.) Paper IV

Lecture No - 27

Dr. Kumari Kavita
Associate Professor
Marwari College, Darbhanga

Topic — Contribution of Eric Fromm:

फ्रॉम ने मनोविश्लेषण में सामाजिक पक्ष पर अत्यधिक बल दिया है। फ्रॉम के अनुसार मानव विकास का आधार संस्कृति है क्योंकि मानव व्यवहार की उत्पत्ति सांस्कृतिक प्रभाव से ही होती है। फ्रॉम ने इस विषय में कहा है कि "मनुष्य की प्रकृति, उसका संवेगात्मक व्यवहार, चिन्ताएं तथा अन्य व्यावहारिक प्रक्रियाएं - सभी संस्कृति से उत्पन्न होती हैं। मानव सतत् प्रयत्नों की सृष्टि है जो मानव इतिहास के रिकार्ड से प्रभावित होते रहते हैं।" इसप्रकार स्पष्ट है कि Fromm के मनोविश्लेषण का आधार तत्व मानव के व्यवहार का सामाजिकता के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण करना ही रहा है। उन्होंने मानव व्यवहार पर संस्कृति के प्रभाव की विशद विवेचना की है, जिसकी मुख्य अवधारणाएं इसप्रकार हैं :—

1) मानव व्यवहार पर संस्कृति का प्रभाव (Influence of culture on human behaviour) :— मनोविश्लेषणवाद के इतिहास में एक ओर जहां फ्रायड ने जैविक नियमों को प्रधानता देते हुए समाज एवं संस्कृति के प्रभाव के प्रति उपेक्षा का भाव अपनाया वहीं दूसरी ओर फ्रॉम ने मानव व्यवहार के अध्ययन के लिए सांस्कृतिक प्रभावों के अध्ययन को अनिवार्य स्वीकार किया है। इस विषय में फ्रॉम का यह विचार है कि मनुष्य समाज और संस्कृति का अभिन्न अंग है। इसलिए यह समाज से

Notes

जितना दूर होता जाता है उतना ही अपने आपको पृथक अथवा अकेला अनुभव करता है। यह पृथकता की अनुभूति केवल मनुष्यों में ही होती है, पशुओं में यह अनुभूति नहीं होती। इसका कारण यह है कि मनुष्यों का व्यवहार परिवर्तनशील होता है जबकि पशुओं का अपरिवर्तनशील स्वभाव होता है। इसके अलावा समस्त पशुओं का अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने का ढंग एक सा होता है। जबकि मनुष्यों में आवश्यकताओं की पूर्ति के ढंग में विविधता दिखाई देती है। इसप्रकार मनुष्य प्रकृति की अपेक्षा संस्कृति से अधिक प्रभावित होता है।

2) संस्कृति तथा प्रकृति के तुलनात्मक प्रभाव (Influence of Culture and Nature) :— फ्रांक के समाजशास्त्रीय सिद्धान्त की दूसरी विवेचना यह है कि उसने जीव के अस्तित्व को एक अर्थ में नश्वर स्वीकार किया है तथा दूसरे अर्थ में शाश्वत। जीव के मरने या जीने के विषय में फ्रांक 'हां' तथा 'नहीं' दोनों ही प्रकार के उत्तर देता है। जीव की नश्वरता के विषय में हां कहने से फ्रांक का तात्पर्य यह है कि मनुष्य प्रकृति का एक अंग है और सभी व्यक्तियों को प्रकृति के क्रूर सिद्धान्तानुसार मरना पड़ता है। इसके अलावा जब वह जीव को शाश्वत स्वीकार करते हैं तो उससे तात्पर्य व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा, पशु प्रेम, सहानुभूति आदि से है जिनको व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत क्षमता, सामर्थ्य, शक्ति और योग्यता से अर्जित करता है। हालांकि फ्रांक ने विशेष रूप से आत्मा की शाश्वतता का वर्णन कहीं नहीं किया है किन्तु उसने

Notes संस्कृति से सम्बन्धित जो उदाहरण दिए हैं उनसे यह धारणा पुष्ट होती है।

3) बाल्यकाल (Childhood) :— फ्रॉम ने फ्रायड के बाल्यकाल के विकास की श्रृंखला के परिवर्तनों को जैविक विकास सिद्धान्त के आधार पर ही स्वीकार किया है। उनके अनुसार व्यक्तित्व निर्माण को सामाजिक चरित्र प्रभावित करता है। माता पिता का चरित्र, आदतें, मान्यताएं, संस्कृति एवं सामाजिक नियम सामाजिक चरित्र के मुख्य स्रोत हैं। इसके अतिरिक्त फ्रॉम ने फ्रायड द्वारा प्रतिपादित विकास की अवस्थाओं को स्वीकार नहीं किया है।

4) व्यक्ति विकास का सिद्धान्त (Theory of Personality development) :— फ्रॉम ने व्यक्तित्व के विकास में अपने विचार व्यक्त करते हुए चरित्र निर्माण पर अत्यधिक बल दिया है। फ्रॉम के अनुसार मानव चरित्र के दो प्रकार होते हैं — (i) व्यक्तिगत चरित्र तथा (ii) सामाजिक चरित्र। व्यक्तिगत चरित्र का निर्माण जन्मजात शक्तियों एवं पारिवारिक वातावरण के द्वारा होता है जो समाज के प्रत्येक व्यक्ति के सुख के लिए समाज में निश्चित किए गए हैं। इसप्रकार व्यक्ति का सामाजिक चरित्र समाज व संस्कृति से सम्बन्धित होता है। यह चरित्र व्यक्ति को संस्कृति की आवश्यकता के अनुरूप कार्य करने के लिये बाध्य करता है।

इसके अतिरिक्त फ्रॉम ने मनुष्य के दो सम्बन्धों के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण किया है। ये सम्बन्ध हैं — (i) सात्मीकरण तथा (ii) समाजीकरण।

Notes

i) सात्मीकरण (Assimilation):— फ्रॉम के अनुसार सात्मीकरण एक ऐसी व्यवस्था है, जिसका सम्बन्ध विभिन्न वस्तुओं के लेन देन से है।

ii) समाजीकरण (Socialization):— समाजीकरण का सम्बन्ध विभिन्न व्यक्तियों के साथ सम्बन्ध रखने से होता है। अर्थात् व्यक्ति समाजीकरण के अन्तर्गत ही दूसरे व्यक्तियों के साथ सम्बन्ध स्थापित करता है।

5) समाज और आचार नीति (Society and Ethics):— फ्रॉम ने समाज एवं समाज द्वारा बनाई गई आचार नीति को भी अत्यधिक महत्व दिया है। इस विषय में फ्रॉम के यह विचार हैं कि व्यक्ति के असामान्य बनने का मुख्य कारण उसका समाज की आचार नीति का पालन न करना ही होता है। इस सम्बन्ध में उसने फ्रायड की इस धारणा की आलोचना की है कि मनुष्य में जन्म से ही बुराइयां भरी होती हैं। फ्रॉम ने इसके विपरीत यह माना है कि मनुष्य में जन्म से अच्छाइयां होती हैं और यदि मनुष्य इन अच्छाइयों का पालन करे तो समाज में अनैतिकता, चोरी, चरित्र भ्रष्टता तथा पतन आदि की प्रक्रियाएं न सफल नहीं हो सकती।

इसप्रकार संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि फ्रॉम ने मनोविश्लेषण को व्यावहारिक, सामाजिक, उपयोगी एवं और अधिक उपयुक्त बनाने का प्रयास किया है।

कुमारी कविता
मारवाड़ी महाविद्यालय, दरभंगा।